THRU the BIBLE



कैसे
पवित्रशास्त्र सहभागिता
का उपयोग करे



शुरू करने से पहले प्रार्थना करें
प्रत्येक पाठ को शुरू करने से पहले, प्रभु से प्रार्थना करें कि वह इसका उपयोग आपको अनुग्रह में और हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ाने के लिए करें।



बाइबल का अंश पढ़ें
जब आप अंश पढ़ें तो परमेश्वर को अपनी आँखें खोलने और उसके वचन की आपकी समझ को गहरा करने के लिए आमंत्रित करें।



पवित्रशास्त्र संलग्नता मार्गदर्शिका का अध्ययन करें
आपके द्वारा पढ़े गए अंश के अर्थ, संदर्भ और व्यक्तिगत अनुप्रयोग पर चिंतन करने के लिए प्रदान की गई पवित्रशास्त्र संलग्नता अध्ययन का अध्ययन करें।



पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर चिंतन करें
प्रत्येक शिक्षण के बाद, व्यक्तिगत चिंतन और अनुप्रयोग के लिए सूचीबद्ध पवित्रशास्त्र संलग्नता सवालों पर विचार करें और आपके छोटे समूह चर्चाओं के लिए.



डॉ. जे. वर्नोन मैक्गी की शिक्षा को सुनें
यदि आप इस अंश पर संपूर्ण ऑडियो शिक्षा सुनना चाहते हैं, तो ttb.bible पर जाएं या अपनी भाषा में THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करने के लिए अंतिम पृष्ठ पर दिए गए QR कोड को स्कैन करें।



हमारे सुझाए गए रोकने और शुरू करने के आइकन का इस्तेमाल करें। यह आपको सामग्री को सोच-समझकर और अपनी लय में आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

आपके विचारार्थ

इस पवित्रशास्त्र सहभागिता का उपयोग कैसे करें पृष्ठ 2

परीक्षा और यात्रा
(उत्पत्ति 22:1-8) पृष्ठ 4

विश्वास प्रमाणित और परमेश्वर का प्रावधान
(उत्पत्ति 22:9-19) पृष्ठ 8

सारा की मृत्यु और अब्राहम का शोक
(उत्पत्ति 23:1-20) पृष्ठ 12

विश्वास की परीक्षा

हे स्वर्गिक पिता,

हमें सिखाएँ कि सच्चा विश्वास कैसा होता है। जब हम आपकी राहों को न समझ पाएँ, तब भी आप पर भरोसा रखने में हमारी मदद करें। हमें ऐसा हृदय दें जो पूरी तरह से आज्ञाकारी हो और यह विश्वास रखे कि आप हमेशा हमारी ज़रूरतें पूरी करेंगे। अपने वचन के द्वारा हमें सामर्थ्य दें।

आमीन।

परीक्षा और यात्रा

उत्पत्ति 22:1-8



"अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा।"

उत्पत्ति 22:2-3

इस अध्याय में परमेश्वर सातवीं और अंतिम बार अब्राहम के सामने प्रकट होते हैं, और वे अब्राहम के जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा प्रस्तुत करते हैं।

उत्पत्ति 22:2 में दिए गए विशेष बल पर ध्यान दें।

तेरा **पुत्र**

तेरा **एकलौता पुत्र**

जिससे तू **प्रेम रखता है**





यीशु

(प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र की पूर्णता)

पिता का प्रिय पुत्र

"और यह आकाशवाणी हुई, **"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।""**
(मत्ती 3:17)

परमेश्वर पिता ने जगत के उद्धार के लिए **स्वेच्छा से अपने पुत्र को दे दिया।**

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16)

इसहाक

(अब्राहम का प्रतिज्ञा का पुत्र)

अब्राहम का प्रिय पुत्र

अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा..." (उत्पत्ति 22:2)

परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली उसने उसके पुत्र इसहाक को बलि चढ़ाने के लिए कहा।

"इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने, अब्राहम से यह कहकर उसकी परीक्षा की, "हे अब्राहम!" उसने कहा, "देख, मैं यहाँ हूँ।"" (उत्पत्ति 22:1)

यीशु को यरुशलम के निकट क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह स्थान जिसे ईश्वर ने बलिदान के लिए चुना था।

'तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और इब्रानी में 'गुलगुता'। '
(यूहन्ना 19:17)

मसीह का बलिदान परमेश्वर की उद्धारकारी योजना का एक भाग था, यद्यपि बहुत से लोग उसे समझ नहीं सके।

यीशु का पुनरुत्थान इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर मृत्यु पर सामर्थ्य रखता है।

"परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: (प्रेरितों के काम 2:24)

क्रूस का यह बलिदान अंततः पिता और पुत्र के बीच का था, जिसने संपूर्ण मानवता के लिए मुक्ति (उद्धार) को पूरा किया। **यीशु अपना क्रूस स्वयं** उठाकर बलिदान के स्थान तक ले गए।

यीशु स्वयं अपना क्रूस उठाकर बलिदान स्थल तक ले गए।

'तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो 'खोपड़ी का स्थान' कहलाता है और इब्रानी में 'गुलगुता'।'
(यूहन्ना 19:17)

मसीह ने पाप के न्याय को स्वयं सह लिया अपने बलिदान के द्वारा।

इसहाक को मोरिय्याह देश में ले जाया गया, जिसके विषय में यह माना जाता है कि यह वही क्षेत्र है जहाँ आगे चलकर यरूशलेम नगर स्थापित हुआ।

"...मोरिय्याह देश में चला जा,... उस पहाड़ पर, जिसके विषय में मैं तुझे बताऊँगा।"
(उत्पत्ति 22:2)

अब्राहम परमेश्वर की आज्ञा को पूरी तरह नहीं समझ पाया, फिर भी उसने परमेश्वर के चरित्र पर भरोसा किया और उसकी आज्ञा का पालन किया।

अब्राहम का विश्वास था कि परमेश्वर इसहाक को मरे हुओं में से जिला सकते हैं।

"क्योंकि उसने मान लिया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि उसे मरे हुओं में से जिलाए, इस प्रकार उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला।"
(इब्रानियों 11:19)

मोरीयाह पर्वत के इस बलिदान में केवल अब्राहम और इसहाक ही शामिल थे, जो इस भेंट के गहरे व्यक्तिगत और आत्मिक स्वरूप को दर्शाता है।

इसहाक ने बलिदान के लिए लकड़ियाँ स्वयं उठाईं।

"तब अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले अपने पुत्र इसहाक पर लादी..."
(उत्पत्ति 22:6)

अब्राहम ने आग और छुरी को अपने हाथ में लिया, जो कि न्याय और बलिदान के प्रतीक हैं।

"...और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया; और वे दोनों एक साथ चल पड़े।"
उत्पत्ति (22:6)

विश्वास प्रमाणित और परमेश्वर का प्रावधान

उत्पत्ति 22:9-19

यीशु

(प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र की पूर्णता)

यीशु ने स्वेच्छा से पिता की इच्छा के अधीन होकर स्वयं को समर्पित कर दिया, मृत्यु का सामना करते हुए भी।

"यह कहते हुए , 'हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो।"
(लूका 22:42)

मसीह ने स्वयं को समर्पित कर दिया पाप के लिए बलिदान के रूप में।

क्रूस मसीह के सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक था।

यीशु ने अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा परमेश्वर की उद्धारकारी योजना के उद्देश्य को पूरा किया।



इसहाक

(अब्राहम का प्रतिज्ञा का पुत्र)

इसहाक ने स्वेच्छा से अब्राहम के सामने खुद को **समर्पित** कर दिया।

अब्राहम ने वेदी बनाई और इसहाक को लकड़ियों पर लिटा दिया। इसहाक संभवतः लगभग **33-37 वर्ष** के थे और विरोध करने के लिए पर्याप्त रूप से बलवान थे, फिर भी उन्होंने अपने पिता की इच्छा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।



इसहाक ने खुद को वेदी पर रखे जाने दिया, जो अपने पिता और अंततः परमेश्वर के प्रति उनके गहरे भरोसे को दर्शाता है।
अंततः ईश्वर में।

अब्राहम का छुरी उठाना सर्वोच्च संकट का क्षण था।

अब्राहम पहले ही विश्वास की कई परीक्षाओं का सामना कर चुके थे:

- ऊर नगर को छोड़ना
- लूत से अलग होना
- इश्माएल को विदा करना

परमेश्वर का प्रावधान: स्थानापन्न बलिदान

यीशु मानवजाति के पापों के बदले सच्चे स्थानापन्न बने।

"देखो, **यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप हरता है।"**
(यूहन्ना 1:29)

मसीह पापियों के स्थान पर मरे, और उन्होंने उस उद्देश्य को पूरा किया जो पहले के बलिदानों में केवल एक प्रतीक मात्र था।

परमेश्वर के मेम्ने की भविष्यवाणी क्रूस की घटना से बहुत पहले ही कर दी गई थी।

इसहाक के बदले एक मेढ़ा दिया गया।

"तब अब्राहम ने आँखें उठाईं, और क्या देखा, कि उसके पीछे एक मेढ़ा अपने सींगों से एक झाड़ी में फँसा हुआ है; अतः अब्राहम ने जाकर उस मेढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि करके चढ़ाया।"
(उत्पत्ति 22:13)

वह मेढ़ा इसहाक के स्थान पर मारा गया, और इस तरह स्थानापन्न बलिदान के सिद्धांत की शुरुआत हुई।

उत्पत्ति 22:8 में अब्राहम का कथन भविष्यद्वाणी के रूप में मसीह की ओर संकेत करता था।

"मेरे बेटे, परमेश्वर होम-बलि के लिए मेम्ने का प्रबंध आप ही करेगा।"

यह कथन भविष्यवाणी के रूप में मसीह की ओर संकेत करता था।

देखो!
यह परमेश्वर का मेम्ना है,
जो जगत के पाप हरता है।" यूहन्ना 1:29



अब्राहम ने उस स्थान का नाम रखा: यहोवा यिरे, जिसका अर्थ है "यहोवा प्रबंध करेगा"।

इसके बाद परमेश्वर ने अपनी वाचा की पुनः पुष्टि की।

"और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी..."
उत्पत्ति 22:18



इसके बारे में सोचें

सवाल 1

परमेश्वर ने अब्राहम की ऐसी पीड़ादायक रीति से परीक्षा क्यों ली? रोमियों 4:1–3 और याकूब 2:21 पढ़ें।

सवाल 2

अब्राहम का तुरंत आज्ञा मानना उसके आत्मिक विकास के बारे में क्या पता चलता है?

लागू करें

सवाल 3

परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के विषय में आपका अनुभव क्या रहा है?



"अदन की वाटिका से लेकर मसीह के क्रूस तक, प्रतिस्थापन के रूप में हमेशा उस छोटे से मेम्ने का बलिदान दिया जाता रहा, जो आने वाले मसीह की ओर संकेत करता था-क्योंकि परमेश्वर ने मानव-बलि की अनुमति कभी नहीं दी। परंतु, जब स्वयं उसका पुत्र इस जगत में आया, तो वह पुत्र हमारे पापों के लिए क्रूस पर गया और उसने अपने प्राण दे दिए।"

सारा की मृत्यु और अब्राहम का शोक

उत्पत्ति 23:1-20

उत्पत्ति 23 की शुरुआत सारा की मृत्यु के विवरण से होती है:

सारा **127 वर्ष** जीवित रही। जब इसहाक का जन्म हुआ, तब वह **नब्बे वर्ष** की थी (उत्पत्ति 21:5), जिसका अर्थ है कि उसकी मृत्यु के समय इसहाक लगभग **सैंतीस वर्ष** का था।



उसकी मृत्यु कनान देश के **हेब्रोन** में हुई, उसी भूमि में जिसका परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था (उत्पत्ति 12:7; उत्पत्ति 13:15)।

अब्राहम ने अपनी पत्नी के लिए गहरा **शोक** मनाया। फिर भी दुःख के इस क्षण में, एक उल्लेखनीय परिस्थिति सामने आती है। अब्राहम के पास उस **भूमि का कोई भी हिस्सा नहीं था** जहाँ परमेश्वर ने उसके वंशजों के रहने का वादा किया था। **उसे उसी भूमि में** सारा के लिए एक कब्र खरीदनी पड़ी जिसका वादा **परमेश्वर ने उससे किया था।**

इसके बाद हम देखते हैं कि कैसे अब्राहम ने वहाँ के निवासियों से **कब्र के लिए भूमि का अनुरोध किया। उन्होंने उसका आदर करते हुए** वह भूमि उसे उपहार के रूप में देने की **पेशकश की**, परन्तु अब्राहम ने **उचित मूल्य पर बातचीत की** और उनसे वह भूमि खरीद ली।

अब्राहम **समय से पहले उस भूमि पर अधिकार नहीं करना चाहता था।** जब तक परमेश्वर ने अपना वादा पूरा नहीं किया, तब तक अब्राहम ने अपनी **ज़रूरत की चीज़ें खरीदीं और परमेश्वर के समय का इंतज़ार किया।**

सारा का इस भूमि में दफ़नाया जाना **इस बात को प्रकट करता है कि अब्राहम को दृढ़ विश्वास था कि इस भूमि के संबंध में परमेश्वर की प्रतिज्ञा एक दिन अवश्य पूरी होगी।**



> परमेश्वर की दो महान आशाएँ और दो महान उद्देश्य हैं। उनका एक पृथ्वी से जुड़ा उद्देश्य है, और उनका एक स्वर्ग से जुड़ा उद्देश्य है।

बाद में, यीशु ने अपने चेलों के सामने **एक और प्रतिज्ञा प्रकट की:**

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो , तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं... मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। (यूहन्ना 14:1-3)

यह प्रतिज्ञा **मसीह में विश्वास करने वालों के लिए तैयार की गई स्वर्गीय आशा को** प्रकट करती है।

इस प्रकार, सारा का दफ़नाया जाना केवल अंतिम संस्कार की एक व्यवस्था नहीं थी, बल्कि यह परमेश्वर के भविष्य के वादों और पुनरुत्थान की आशा की ओर संकेत करने वाला विश्वास का एक कार्य था।



इसके बारे में सोचे

सवाल 1

अपने आपको "परदेशी और प्रवासी" कहकर अब्राहम हमें इस संसार में विश्वास के द्वारा जीवन जीने के बारे में क्या सिखाता है?

सवाल 2

अब्राहम का धैर्य अपने हाथों में मामले को लेने के बजाय परमेश्वर के समय पर उसके भरोसे को कैसे दर्शाता है?

सोचिए कि आप परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय किन तरीकों से मामलों को अपने हाथों में ले लेते हैं।

लागू करें

सवाल 3

परमेश्वर के भविष्य संबंधी हमारे आशा-भरे विश्वास से आज हमारा जीवन किन-किन प्रकारों से प्रभावित होता है? उन्हें सूचीबद्ध करें।

जो लागू करना है उसका चित्र बनाये

इससे आपको क्या सीख मिली?

अपने जीवन में **परमेश्वर की समझ को** लागू करना।

मैकगी का सुविचार



"और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी की सभी जातियाँ आशीष पाएँगी।" आज मसीह के सुसमाचार का संदेश लगभग पूरे संसार में पहुँच चुका है। यह सत्य है कि अब भी बहुत से लोग हैं जिन्होंने इसे नहीं सुना है-यहाँ तक कि हमारे अपने बीच भी ऐसे लोग हैं। फिर भी, यह आशीष सभी राष्ट्रों तक पहुँच चुकी है। और राष्ट्रों के लिए जो सच्ची आशीष है, वह केवल मसीह के द्वारा ही प्राप्त होती है।"

THRU the BIBLE

हमारे संसाधनों तक पहुँचें

THRU the BIBLE ऐप डाउनलोड करें और ऑडियो बाइबल शिक्षाएँ सुनें 200 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है।

ttb.bible पर जाएँ

स्क्रिप्चर एंगेजमेंट पुस्तक में अधिक खंडों वाली हमारी इंटरैक्टिव डिजिटल फ्लिप पुस्तक खोजें हमारी वेबसाइट पर

ttbsa.org पर जाएँ